प्रस्तावना

दीनदयाल शोध संस्थान के मुख्यालय दिल्ली के अलावा मुंबई में भी प्रतिवर्ष नानाजी स्मृति व्याख्यान का आयोजन किया जाता है. इस कड़ी में चतुर्थ व्याख्यान एक अप्रैल को घैसास सभागार, विले पारले में आयोजित किया गया. विषय था राष्ट्रधर्म व राज्यधर्म. और वक्ता थे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के माननीय सरकार्यवाह श्री सुरेश (भय्याजी) जोशी. इस वर्ष हम दो महापुरुषों का जन्मशताब्दी वर्ष मना रहे हैं-एकात्म मानवदर्शन के प्रणेता पंडित दीनदयाल उपाध्याय, और उस दर्शन को शिल्प रूप देने वाले राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख. संस्थान के तत्वावधान में यह कार्यक्रम हो रहा था तो स्वाभाविक रूप से दोनों महापुरूषों के स्मरण का कार्यक्रम था. दीनदयाल जी एक चिंतनशील व्यक्तित्व थे. देश का दुर्भाग्य रहा कि उन्हें समय बहुत कम मिला. किन्तु वे देश को एक अत्यन्त गहरा, देश की आत्मा को समझकर, इस देश का मूलभूत चिन्तन, इस देश के सामने एक वैचारिक सम्पदा के रूप में देकर गए. परन्तु चिन्तन, चिन्तन के स्तर पर ही रह जाए, अथवा ग्रन्थों में सीमित न रह जाए, अपितु इसका व्यावहारिक रूप कहीं अवश्य प्रकट हो, इसकी आवश्यकता रहती है. तभी सिद्धान्तों का शक्ति-सामर्थ्य सिद्ध होता है. पंडित दीनदयाल जी के द्वारा रखा गया चिन्तन व्यावहारिक धरातल पर उतारने का भागीरथ प्रयास श्रद्धेय नानाजी ने किया. उन्होंने चिन्तन के प्रकाश में, दीनदयाल शोध संस्थान के माध्यम से नित्य नए प्रयोग किए और और इन प्रयोगों की सफलता के आधार पर चिन्तन का सामर्थ्य सिद्ध हुआ.

लेकिन पिछले दिनों देश में वैचारिक स्तर पर एक बवाल मचा. देश के एक वर्ग ने स्वार्थवश राष्ट्र की अवधारणा पर ही प्रश्न चिन्ह लगा दिया. अज्ञानतावश, मीडिया भी इस बहस में शामिल हो गया. और देश का बहुमूल्य समय इन अनावश्यक बहस में व्यर्थ चला गया. परन्तु इस बहाने देश के सामने एक बार राष्ट्र, देश व राज्य की परिभाषाओं की देशज व्याख्या करने का अच्छा अवसर प्राप्त हो गया. माननीय भय्याजी ने इन अवधारणाओं को देश के सम्मुख बहुत ही सरल व रोचक ढंग से प्रस्तुत किया. देश से अज्ञानता के बादल छंटे, और मैकॉले प्रेरित अवधारणाओं को स्वार्थवश ढोने वाले तत्वों का यथार्थ सामने आए, इस उद्देश्य से संस्थान ने इस उद्बोधन को प्रकाशित करने का निर्णय लिया. प्रस्तुत है, उस विद्वतापूर्ण उद्बोधन का संपादित स्वरूप.